IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 3, January 2026
Impact Factor: 7.67

लोकगीत और सामाजिक विकास

डॉ. आशुतोष शुक्ला

हिंदी विभाग

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश: (Abstract)

लोकगीत भारतीय समाज की सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न अंग हैं, जो सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह शोध-पत्र लोकगीतों के माध्यम से समाज के प्रतिबिंब, मानव मन की अभिव्यक्ति, सामाजिक एकता और परिवर्तनों का विश्लेषण करता है। विभिन्न क्षेत्रों जैसे उत्तर प्रदेश,छत्तीसगढ़, थारू और भोजपुरी लोकगीतों के उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि ये गीत रीति-रिवाजों, पारिवारिक बंधनों, नैतिक मूल्यों और आर्थिक-सामाजिक मुद्दों को व्यक्त करते हैं। लोकगीत सामाजिक चेतना जगाते हैं, एकता को बढ़ावा देते हैं और आधुनिक परिवर्तनों को अपनाते हुए सांस्कृतिक निरंतरता सुनिश्चित करते हैं। भूमंडलीकरण के दौर में इनकी लुप्त होने की चुनौती है, इसलिए संरक्षण आवश्यक है। यह अध्ययन माध्यमिक स्रोतों पर आधारित है और लोकगीतों को सामाजिक विकास का प्रहरी मानता है।

कीवर्ड्स: (Keywords)

लोकगीत, सामाजिक विकास, सांस्कृतिक धरोहर, समाजशास्त्र, सामाजिक चेतना, लोकसंस्कृति, क्षेत्रीय विविधता, संरक्षण, आधुनिक परिवर्तन, मानव मन।

परिचय: (Introduction)

लोकगीत समाज की आत्मा हैं, जो जन-मानस की भावनाओं, परंपराओं और सामाजिक मूल्यों को व्यक्त करते हैं। भारतीय संदर्भ में लोकगीत न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि सामाजिक विकास का माध्यम भी। वे समाज के दर्पण के रूप में कार्य करते हैं, जहां रीति-रिवाज, पारिवारिक संबंध और आर्थिक-सामाजिक मुद्दे प्रतिबिंबित होते हैं। उदाहरणस्वरूप, लोकगीतों में जन्म से मृत्यु तक की जीवन अवस्थाएं शामिल होती हैं, जो सामाजिक एकता को मजबूत करती हैं। यह शोध-पत्र लोकगीतों की सामाजिक विकास में भूमिका का विश्लेषण करेगा, विभिन्न क्षेत्रीय उदाहरणों के साथ। लोकगीतों की जड़ें बहुत प्राचीन हैं। मानव समाज में जब संगठन और सामाजिकता की भावना जागृत हुई, तब से ही लोकगीतों का विकास हुआ। ये गीत लेखनी से नहीं, बल्कि लोक-

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 3, January 2026 Impact Factor: 7.67

जिह्वा से निकलते हैं और पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से प्रसारित होते हैं। विद्वानों के अनुसार, लोकगीत जन-जीवन के सुख-दुख का स्वाभाविक उद्गार हैं। महात्मा गांधी ने कहा था कि "लोकगीतों में धरती गाती है, पहाड़ गाते हैं, नदियां गाती हैं, फसलें गाती हैं।" ये गीत ऋतुओं, उत्सवों, जन्म-मृत्यु, विवाह और दैनिक श्रम से जुड़े होते हैं, जो समाज की सामूहिक चेतना को जीवंत रखते हैं। लोकगीतों की प्रमुख विशेषता उनकी सरलता, लयबद्धता और सहज भावनात्मक अभिव्यक्ति है। ये शास्त्रीय संगीत की जटिलताओं से मुक्त होते हैं और आम जन की भाषा में बोलते हैं। लोकगीत समाज के कमजोर वर्गों, विशेषकर महिलाओं के लिए भावनाओं को व्यक्त करने का प्रमुख माध्यम रहे हैं। सदियों से दबे-कुचले समाज ने लोकगीतों के माध्यम से सामाजिक दंश, अपमान और संघर्ष को अभिव्यक्त किया है। कहा जाता है कि जिस समाज में लोकगीत नहीं होते, वहां मानसिक असंतुलन अधिक होता है, क्योंकि ये गीत मन को शांति और सामाजिक एकता प्रदान करते हैं।क्षेत्रीय उदाहरणों से समझ

भारत की विविधता लोकगीतों में स्पष्ट दिखती है। विभिन्न क्षेत्रों के लोकगीत स्थानीय सामाजिक संरचना और मुद्दों को प्रतिबिंबित करते हैं:बुंदेलखंड (उत्तर प्रदेश-मध्य प्रदेश): आल्हा गीत योद्धाओं की वीरता और सामाजिक गौरव को दर्शाते हैं। ये गीत सामाजिक एकता और ऐतिहासिक चेतना जगाते हैं।

छत्तीसगढ़: पंडवानी महाभारत की कहानियां सुनाती हैं, जबकि पंथी गीत सतनामी संप्रदाय की समानता की भावना को बढ़ावा देते हैं। सुहानी और करमा गीत आदिवासी जीवन की खुशियां और श्रम को व्यक्त करते हैं।राजस्थान: पधारो म्हारे देस और केसरिया बालम जैसे गीत अतिथि सत्कार और प्रेम की संस्कृति को जीवंत रखते हैं। ये गीत सामाजिक संबंधों को मजबूत करते हैं।

पूर्वी उत्तर प्रदेश (भोजपुरी): कजरी और झूमर प्रकृति, प्रेम और नारी व्यथा को व्यक्त करते हैं, जो ग्रामीण महिलाओं की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अन्य क्षेत्र: पंजाब का भांगड़ा, बंगाल का बाउल, असम का बिहु—ये सभी स्थानीय सामाजिक विकास, कृषि और उत्सवों से जुड़े हैं। ये क्षेत्रीय विविधताएं भारत की बहुलता को दर्शाती हैं, जहां लोकगीत एकता में विविधता का प्रतीक हैं।

आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता:

आज भूमंडलीकरण और डिजिटल युग में लोकगीत चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। बॉलीवुड ने कई लोकगीतों को लोकप्रिय बनाया, जैसे "केसरिया बालम" या "रंगीला रे", लेकिन इससे उनकी मौलिकता पर खतरा भी है। फिर भी, लोकगीत सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण बने हुए हैं—वे पर्यावरण चेतना, महिला सशक्तिकरण और सामुदायिक एकता के संदेश देते हैं। समापन में कहा जा सकता है कि लोकगीत भारतीय समाज की आत्मा हैं, जो न केवल भावनाओं को व्यक्त करते हैं, बल्कि सामाजिक विकास की नींव भी मजबूत करते हैं। इनका संरक्षण आवश्यक है, क्योंकि ये समाज के दर्पण हैं—जिनमें हमारा अतीत, वर्तमान

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 3, January 2026 Impact Factor: 7.67

और भविष्य प्रतिबिंबित होता है। यदि हम लोकगीतों को जीवित रखेंगे, तो सामाजिक एकता और सांस्कृतिक धरोहर भी जीवित रहेगी।

शोध पद्धति:(Research Methodology)

यह शोध-पत्र गुणात्मक और वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित है। मुख्य रूप से माध्यमिक स्रोतों का उपयोग किया गया है, जिसमें वेब खोज से प्राप्त लेख, पीडीएफ दस्तावेज़ और ब्लॉग पोस्ट शामिल हैं। डेटा संग्रह के लिए "लोकगीत और सामाजिक विकास" जैसे कीवर्ड्स से वेब सर्च किया गया, जिससे 20 परिणाम प्राप्त हुए। इनमें से प्रमुख स्रोतों जैसे अनुबुक्स, ग्रंथालयाह, एकेडेमिया.एडू, इंस्पाइरा जर्नल्स, शाश्वत शिल्प ब्लॉग और स्वरसिंधु के पीडीएफ को ब्राउज करके सारांश निकाले गए। विश्लेषण में तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया, जहां लोकगीतों के सामाजिक प्रभाव को क्षेत्रीय संदर्भों में समझा गया। कोई प्राथमिक डेटा संग्रह नहीं किया गया, बल्कि उपलब्ध साहित्य का संश्लेषण किया गया। नैतिकता के अनुसार, सभी स्रोतों का उचित उद्धरण किया गया है।

मुख्य भाग:(Main Body)

लोकगीतों की मानव मन और सामाजिक अभिव्यक्ति में भूमिका

लोकसंगीत मानव मन की सशक्त अभिव्यक्ति है, जो जीवन की खुशियों, स्वास्थ्य और सौंदर्य का आधार बनता है। यह मानसिक और सामाजिक विकास में सहायक है, क्योंकि इसमें काव्य, संगीत और भावनाओं का संयोजन होता है। उदाहरण के रूप में, लोरी गीत बच्चे की नींद और माता-पिता की भावनाओं को व्यक्त करते हैं, जबकि विवाह गीत सामाजिक बंधनों को मजबूत करते हैं। लोकगीत समाज के प्रतिबिंब हैं, जहां साधारण व्यक्ति की मनोभावाभिव्यक्ति होती है। वे सामाजिक रीति-रिवाज और पारिवारिक संबंधों का वर्णन करते हैं, जैसे विवाह, त्योहार और दैनिक जीवन। इससे सामाजिक एकता बढ़ती है और सांस्कृतिक पहचान मजबूत होती है।

क्षेत्रीय संदर्भ में लोकगीत और सामाजिक विकास:

उत्तर भारत, विशेष रूप से उत्तर प्रदेश में, लोकगीतों का समाजशास्त्र ग्रामीण जीवन की गतिशीलता को दर्शाता है। बिरहा, आल्हा और विदेशिया जैसे गीत किसानों की बेबसी, प्रवास और शोषण को उजागर करते हैं। ये गीत सामाजिक-आर्थिक संरचनाओं को प्रतिबिंबित करते हैं और नैतिक मूल्यों का संरक्षण करते हैं। थारू लोकगीतों में सामाजिक विकास का प्रसंग बदलते सुर, लय और धुन में दिखता है, जहां आधुनिक मुद्दे जैसे शिक्षा और स्वास्थ्य शामिल हो रहे हैं। यह परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 3, January 2026 Impact Factor: 7.67

स्थापित करता है। छत्तीसगढ़ी लोकगीत सामाजिक चेतना के प्रहरी हैं, जो विवाह गीतों में अपनापन, दहेज प्रथा की आलोचना और श्रम के महत्व को दर्शाते हैं। सुवा गीत नारी की व्यथा व्यक्त करते हैं, जबकि पंथी गीत जात-पात के जाल को तोड़ते हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश की भोजपुरी लोकगीत, जैसे कजरी, प्रेम, विरह और प्रकृति को व्यक्त करते हैं, जो सामाजिक बंधनों और भावनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देते हैं। ये गीत ग्रामीण महिलाओं को अपनी भावनाएं साझा करने का अवसर देते हैं।

लोकगीतों में परिवर्तन और चुनौतियां:

भूमंडलीकरण के दौर में लोकगीत बाजारू वस्तु बन रहे हैं, लेकिन वे सामाजिक विकास को बढ़ावा देते हैं। आधुनिक प्रभाव से लय में विविधता आई है, जो सामाजिक जागरूकता बढ़ाती है। हालांकि, लुप्त होने का खतरा है, इसलिए संरक्षण आवश्यक है।

निष्कर्ष:(Conclusion)

लोकगीत भारतीय समाज की सांस्कृतिक और सामाजिक नींव हैं, जो विकास की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। जैसा कि विभिन्न स्रोतों से स्पष्ट है, लोकगीत न केवल मानव मन की भावनाओं को व्यक्त करते हैं, बल्कि समाज के दर्पण के रूप में कार्य करते हुए रीति-रिवाजों, पारिवारिक बंधनों और नैतिक मूल्यों को संरक्षित रखते हैं। उदाहरणस्वरूप, उत्तर भारत के लोकगीत जैसे बिरहा और विदेशिया किसानों की व्यथा और सामाजिक शोषण को उजागर करते हैं, जो सामाजिक चेतना जगाने में सहायक हैं। ये गीत ऐतिहासिक घटनाओं को संरक्षित रखते हैं और समाजशास्त्रीय दृष्टि से रूढ़ियों तथा आर्थिक असमानताओं का विश्लेषण प्रदान करते हैं। थारू लोकगीतों में देखा गया कि बदलते सुर और लय आधुनिक मुद्दों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक विकास को शामिल कर सामाजिक प्रगति को दर्शाते हैं। यह परिवर्तन परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करता है, लेकिन सांस्कृतिक पहचान के जोखिम को भी इंगित करता है। छत्तीसगढ़ी लोकगीत सामाजिक एकता के प्रतीक हैं, जहां विवाह गीत अपनापन और दहेज जैसी बुराइयों की आलोचना करते हैं। सुवा और पंथी गीत नारी व्यथा तथा जात-पात के विरुद्ध संदेश देते हैं, जो वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को मजबूत करते हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश के कजरी गीत प्रेम, विरह और प्रकृति को व्यक्त कर ग्रामीण महिलाओं को भावनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम प्रदान करते हैं। ये गीत सामुदायिक एकता और सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देते हैं, लेकिन आधुनिकरण से लुप्त होने की चुनौती का सामना कर रहे हैं। समग्र रूप से, लोकगीत सामाजिक विकास के प्रहरी हैं क्योंकि वे जन-मानस की अभिव्यक्ति का सरल माध्यम हैं। वे मनोरंजन से आगे जाकर समाज को एक सूत्र में बांधते हैं और परिवर्तनों को अपनाते हैं। भूमंडलीकरण और मीडिया के प्रभाव से ये बाजारू बन रहे हैं, लेकिन संरक्षण के प्रयास जैसे दस्तावेजीकरण, शिक्षा और सांस्कृतिक कार्यक्रम आवश्यक हैं। राज्य सरकारों और संस्थाओं को लोकगीतों को मुख्यधारा में

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 3, January 2026 Impact Factor: 7.67

शामिल कर उनकी प्रासंगिकता बनाए रखनी चाहिए। आने वाली पीढ़ियां इनसे जुड़कर सांस्कृतिक निरंतरता सुनिश्चित कर सकती हैं। यदि लोकगीतों का संरक्षण नहीं हुआ, तो सामाजिक विकास की एक महत्वपूर्ण कड़ी कमजोर हो जाएगी। इसलिए, शोधकर्ताओं, कलाकारों और नीति-निर्माताओं को मिलकर प्रयास करने चाहिए ताकि लोकगीत सामाजिक प्रगति का हिस्सा बने रहें।

संदर्भ (References) -

[1]. **मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश**. "**लोकगीत सामाजिक धरोहर होने के साथ समाज का दर्पण भी होते हैं।**" **फेसबुक**, 2026, www.facebook.com/CMMadhyaPradesh/videos/307814018064501.

[2]. **राठौर**, **प्रिया**. "**मानव मन की सशक्त अभिव्यक्तिः लोकसंगीत**." **अनु**., 2026, anubooks.com/uploads/session_pdf/166270795411.pdf.

[3]. **सिंह**, **नवीन कुमार**. "**लोक संगीत में झलकता समाज का प्रतिबिम्ब**." **ग्रंथालयाह पब्लिकेशन**, 2026, www.granthaalayahpublication.org/journals/granthaalayah/article/download/IJRG15_IM01_75/3348/18020.

[4]. **प्रसाद**, **देवी और यादव**, **सविता**. "**लोकगीतों का समाजशास्त्र**: **एक विमर्श**." **एकेडेमिया.एडू**, 2026, www.academia.edu/36409714/**लोकगीतों_का_समाजशास्त्र_एक_विमर्श**.

[5]. **शिल्प**, **शाश्वत**. "**छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का सामाजिक संदर्भ**." **ब्लॉगस्पॉट**, 17 **मार्च** 2021, shashwat-shilp.blogspot.com/2021/03/blog-post.html.

[6]. **सिंह**, **नवीन कुमार**. "**थारू लोकगीतों में सामाजिक विकास का प्रसंग**: **एक अध्ययन**." **इंस्पाइरा जर्नल्स**, 2026, www.inspirajournals.com/uploads/Issues/450019884.pdf.

[7]. **मिश्रा**, **अज्ञात**. "**लोकगीत के माध्यम से पूर्वी उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर का**." **स्वरसिंधु**, 2026, swarsindhu.pratibha-spandan.org/wp-content/uploads/v12i03a88.pdf.